शांति तथा सद्भावना के संवर्द्धन में अहम् भूमिका निभा सकता है मीडिया
शांतिवन में मीडिया महासम्मेलन में पहुंचे २००० मीडियाकर्मी

आबू रोड, २१ सितम्बर। पूरी दुनिया में शांति के लिए युद्ध की भाषा का प्रयोग किया जाना बहुत बड़ी विडम्बना है। मीडिया ने शांति तथा सद्भावना के लिए भले ही बीते समय में बहुत बड़े प्रयास किए लेकिन उससे अशांति में निरंतर वृद्धि हुई है। वास्तव में अशांति मन में पैदा होती है, अशांति समाप्त करने के लिए मन को खंगालना होगा। उक्त उदगार सोसायटी ऑफ मीडिया इनिशिएटिव फॉर वैल्यूज के राष्ट्रीय संयोजक तथा वरिष्ठ पत्रकार प्रो.कमल दीक्षित ने व्यक्त किये वे ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग द्वारा शांतिवन में आयोजित तीन दिवसीय मीडिया महासम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे।

आगे उन्होंने कहा कि मन की शांति के लिए आत्मा का शुद्धिकरण परमावश्यक है। आज समाज की दुर्दशा में मीडिया की महती भूमिका है। ऐसे में अब समाज के सामाजिक सरोकारों को मीडिया को प्रमुखता देना होगा। उल्लेखनीय है कि सम्मेलन में भारत के विभिन्न प्रांतों व नेपाल के लगभग दो हजार पत्रकार भाग ले रहे हैं। इनका स्वागत करते हुए मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.ओमप्रकाश ने कहा कि अशांति विश्व व्यापी संक्रमण रोग का रूप धारण कर रही है। इस बहाव को थामने की क्षमता मीडिया में ही है।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आत्मा का धर्म शांति व पवित्रता है। इन दो गुणों को धारण करके शांति तथा सद्भावना के संवर्द्धन में मीडिया निर्णायक भूमिका निभा सकता है। संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि यदि साकारात्मक सामग्री परोसते हुए मीडिया मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में आगे आए तो भारत को फिर से विश्व गुरु का दर्जा दिलाना मुश्किल नहीं होगा।

राजस्थान विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष प्रो.संजीव भनावत ने कहा कि जब कुछ नकारात्मक शक्तियां आतंकवादियों को प्रशिक्षित कर सकती हैं तो हम अहिंसावादियों की सेना क्यों नहीं तैयार कर सकते। नकारात्मक मूल्य बोध को समाप्त करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। लोग साकारात्मकता अपनाना चाहते हैं लेकिन उन्हें वैसी सामग्री तो मीडिया को ही परोसनी होगी।

दैनिक महामेधा के सलाहकार संपादक मधुकर द्विवेदी ने कहा कि कलम की ताकत विध्वंस के लिए नहीं बल्कि शांति तथा संद्भावना के संवर्द्धन में इस्तेमाल की जानी चाहिए। मधुबन की पावन भूमि से शुचिता एवं शांति का जो संदेश दिया जा रहा है उसके प्रचार-प्रसार के लिए हमें शांतिदूत बनकर आगे आना होगा। नफरत की दीवारें तोड़ने का सामर्थ्य हम में है। अखिल भारतीय लघु समाचार-पत्र संगठन के अध्यक्ष श्याम सुंदर त्रिपाठी ने कहा कि मीडियाकर्मी मन व विचारों की शुद्धता से लोगों में जागृति ला सकते हैं। विजन वर्ल्ड टीवी के संपादक आशीष गुप्ता ने कहा कि मीडिया को स्वनियंत्रण की आवश्यकता है। भाषा के प्रयोग में संतुलन बनाए रखना होगा। दुर्भाग्य इस बात का है कि आजादी के दौर में कलम को दिल नियंत्रित करता था अब इसका नियंत्रण मार्केटिंग के हाथ में चला गया है।

फोटो, २१एबीआरओपी, १, २, ३ सम्मेलन का दीप जलाकर उदघाटन करते अतिथि, सम्मेलन में उपस्थित पत्रकार।